P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

20वीं सदी में शराब विरोधी आन्दोलन का ऐतिहासिक अध्ययनः– उत्तराँचल के विशेष संदर्भ में

अर्जुन सिंह
शोधार्थी
इतिहास विभाग,
हे0न0ब0ग0 विश्वविद्यालय,
गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

20वीं सदी में उत्तरांचल में विविध स्थानीय समस्याओं को लेकर क्षेत्रीय स्तर पर आन्दोलन चले, जिनका नेतृत्व स्थानीय नेताओं, महिलाओं, जनसमुदाय ने किया। आन्दोलनों में कुली बेगार, डोला पालकी, वन आन्दोलन, गाडी–सडक आन्दोलन, शराब बंदी, आदि लोकप्रिय रहे। इन्ही में एक शराब विरोधी आन्दोलन 20वीं सदी के प्रारंभिक दौर से ही न केवल राष्ट्रीय स्तर पर वरन स्थानीय स्तर पर महिला सक्रियता वाले स्वयं स्फूर्त आन्दोलन के रूप में शुरू हुआ।

शराब के दुष्परिणामों से चिंतित होकर छिटपुट रूप से मदिरा सेवन का विरोध हमेशा से की किया जाता रहा है। फिर भी शराब सेवन की परम्परा औपनिवेशिक शासकों की देन हैं, पाश्चात्य सम्पर्क में आनें से भारतीयों में भी शराब का प्रचलन होता गया। जो समाज में बडी समस्या के रूप में उभरी, अतः गाँधी जी के नेतृत्व में चले आन्दोलन में शराब प्रमुख मुद्दा बना रहा, गाँधीवादी आन्दोलन से उत्साहित होकर स्थानीय स्तर पर शराब बंदी के समर्थन में आन्दोलन प्रारम्भ हुये। ब्रिटिश गढवाल में भी शराब बंदी आन्दोलन शुरू हुआ। औपनिवेशिक नुमाइन्दों ने भी पहाड में शराब के प्रचार में कोई कसर नहीं छोडी। परिणामस्वरूप शराब की बढती प्रवृति के कारण सामाजिक अशांति, असुरक्षा, लोंगो की आर्थिकी पर भुरा, नैतिकता का पतन, आदि तमाम समस्यायें उत्पन होनें लगी। अन्ततः इन समस्याओं के मूल शराब संस्कृति के विरूद्व जबरदस्त आन्दोलन शुरू हुआ।

मुख्य शब्द : मदिरा, गाँधीवादी, नुमाइन्दो, संस्कृति, औपनिवेशिक, नैतिकता।

प्रस्तावना

20वीं सदी में उत्तराँचल में विविध सामाजिक समस्याओं को लेकर आन्दोलन हुये, जिनका नेतृत्व स्थानीय नेताओं, महिलाओं, जनसमुदायों ने किया। आन्दोलनों में कुली बेगार, डोला पालकी, वन आन्दोलन, गाडी–सड़क आन्दोलन, शराब बंदी एवं विश्वविद्यालय आन्दोलन आदि लोकप्रिय रहे हैं। इन्हीं में एक शराब विरोधी आन्दोलन 20वीं सदी के प्रारंभ से न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु पर्वतीय प्रदेश उत्तराँचल में भी व्यापक स्तर पर हुआ। जिसमें महिलाओं की सक्रिय भागीदारी रही। आन्दोलन असंगठित रूप से वर्तमान में भी निरंतरता बनाये रखा है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध छात्र का शोध पत्र लिखनें का प्राथमिक उद्देश्य पर्वतीय अंचलों में शराब संस्कृति का प्रचलन कैसे हुआ को उजागर करना है। द्वितीय उद्देश्य मद्यसेवन से होनें वाले अशंतोष को रेख्यांकित करना है, तथा इस कुप्रथा के विरूद्व होनें वाले जन आन्दोलन को पाठकों के समक्ष लाना है। और सबसे महत्वपूर्ण आन्दोलन के असफलताओं एवं सफलताओं का मूल्यांकन करते हुये आन्दोलन की प्रसांगिकता को उजागर करना है।

नशे के रूप में शराब सेवन मानवीय उपयोग में लाये गये विभिन्न व्यसनों में से एक है। व्यसनों के नकारात्मक प्रभावों को न केवल व्यक्ति, परिवार, समाज बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को भुगतना पडता है। इस समस्या से चिंतित होकर छिटपुट रूप से मदिरा सेवन का प्रतिरोध हमेशा से किया जाता रहा है। जिसके बारे में जानकारी अर्थशास्त्र,[1] स्मृतिग्रंथों[2,] मध्यकालीन राजनीति शास्त्रों[3] एवं शासकों के शासनादेशों[4,5] में मिलते हैं। फिर भी शराब सेवन की वर्तमान परम्परा ब्रिटिश शासन की देन है। पाश्चात्य सम्पर्क में आने से भारतीयों में भी धीरे–धीरे शराब का प्रचलन होता गया। यूरोपीय परम्परा भारतीयों की लत में परिवर्तित होने लगी। अंग्रेजों द्वारा चीन[6] में अपनाई गई अफीम नीति के समान भारत में भी अंग्रेजों ने शराब का खूब प्रचार–प्रसार किया ताकि अधिक से

अधिक राजस्व प्राप्त किया जा सके। यद्वपि राजस्व के लिये शराब का प्रयोग प्रारम्भ से ही किया जाता रहा है, कौटलीय अर्थशास्त्र में शराब से प्राप्त राजस्व संग्रहण के लिये तो पृथक सुराध्यक्ष विभाग की स्थापना की बात की गई है,[7] फिर भी अंग्रेजी सरकार नें इस नीति का व्यापक स्तर पर पालन किया। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान शराब सेवन समाज में एक बडी समस्या के रूप में उभरी जिसका सर्वाधिक नकारात्मक असर महिलाओं एवं बच्चों को झेलना पडा। अतः गाँधी जी के नेतृत्व में हुये आन्दोलन में मद्यशालाओं पर धरना प्रदर्शन एवं शराब का बहिष्कार अभिन्न अंग के रूप में जुडा रहा, गाँधी जी के नेतृत्व शराब के बहिष्कार को व्यापक स्तर पर सफलता मिली। गाँधीवादी आन्दोलन से उत्साहित होकर स्थानीय स्तर पर भी शराब बंदी के समर्थन में आन्दोलन प्रारम्भ होनें लगे।

औपनिवेशिक कालीन उत्तराँचल में भी शराब सेवन एक बडी सामाजिक समस्या के रूप में उभरी। जिसके विरूद्व सशक्त आन्दोलन शुरू हुआ। यद्वपि पर्वतीय क्षेत्रों में पारम्परिक मद्य सेवन की परम्परा पूर्वकाल से चली आ रही थी,[8] किन्तु यह कभी भी समस्या का कारण नही बनी। जब तक कि प्रदेश पाश्चात्य संपर्क में नही आया। जैसे–जैसे पर्वतीय अंचल पाश्चात्य सम्पर्क में आता गया मद्यपान की नई संस्कृति से सामना हुआ। शहरों, छावनियों के निर्माण, स्थानीय लोगों के सेना में प्रवेश, विविध सरकारी कार्यालयों, पर्यटकों द्वारा, पर्वतीय क्षेत्रों में कच्ची शराब प्राप्ति की सुगमता एवं सबसे महत्वपूर्ण ब्रिटिश सरकार के अधिक से अधिक राजस्व संग्रहण नीति के कारण पहाड़ों में मद्य संस्कृति का प्रसार हुआ। बिकेट(1860) ने अपने बन्दोबस्त विवरण में स्वीकार किया कि कुमाऊँ के लोग शराब नही पीते।[9] 1861 में कुमाऊँ के सीनियर कमिश्नर गाइल्स ने आबकारी प्रशासन की रिपोर्ट में कहा है कि अभी भी पहाडी लोग नशे के व्यसन से मुक्त है।[10] कुमाऊँ कमिश्नर हेनरी रेम्जे(1856–84) नें वर्णन किया है कि पहाडी क्षेत्रो में शराब का सेवन नही किया जाता, और न ही इसकी संभावना है। उन्होने यह भी स्पष्ट किया कि छावनियों और सैनिक चौकियों के अतरिक्त शराब की दुकानें कही नही खुलने दी जायेगी।[11] सभंवतः उक्त प्रशासको नें पहाड़ों में अग्रेजी शराब के प्रचलन का नही होने का विवरण दिया है। क्योंकि देशी शराब (कच्ची शराब) का उत्पादन एवं उपभोग पहाड़ों में पूर्वकाल से होता चला आ रहा था। अंग्रेजी शासन ने देशी शराब के उत्पादन पर कुछ पाबंदियाँ अवश्य लगाई, किन्तु उसका कारण शराब को राजस्व व्यवस्था के अन्तर्गत लाना था। 1912–13 में गढवाल गजेटियर वाल्टन नें वर्णन किया है कि गढ़वाल में आबकारी विभाग द्वारा सर्वाधिक ऊँची बोली लगाने वाले को ही शराब निर्माण का विशेषाधिकार दिया जाता है और पिछले दस वर्षों मे आबकारी से मिलने वाली सरकारी आय तीन गुनी हो गई है।[12] शीघ्र ही प्रशासन रेम्जे आदि के बातों से मुकर गई, औपनिवेशिक नुमाइन्दो ने पहाड में शराब के प्रचार में कोई कसर नही छोडी। शराब भू–राजस्व एवं वनों से मिलनें वाले राजस्व के बाद आय का सबसे बडे स्त्रोत में से एक था। नशे की प्रवृति को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से ग्रामीण अंचलों में कच्ची शराब के निमार्ण को लाइसेंस प्रणाली के आधार पर नियमित किया गया[13] एवं शहरों में अंग्रेजी शराब की दुकानें स्थापित की गई। फिर भी 1940–50 के दशक तक पर्वतीय क्षेत्रों में अंग्रेजी शराब का प्रचलन कम ही था। 1950 के बाद संचार मार्गों के विकास के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी विदेशी शराब का प्रयोग तेजी से होने लगा। खासकर 1960 के दशकों में जब सीमांत प्रदेशों के विकास पर ध्यान दिया जाने लगा, अतः मैदानी क्षेत्रो से संपर्क होने से अंग्रेजी शराब पहाड़ों में तेजी से बढने लगी।[14] समय के साथ आबकारी राजस्व में भी वृद्वि होनें लगी। 20वीं सदी के प्रारम्भिक दो दशकों में प्रशासन को शराब से मिलने वाली कुल राजस्व 131440/ रूपये था[15]। 1930 के दशक में उग्र मद्यनिषेध आन्दोलन से यद्वपि शराब के बिक्री पर कुछ हद तक अंकुश लगा रहा, फिर भी पूर्ण शराब बंधी लागू नहीं की जा सकी। 1939–40 के सरकारी सत्र (बजट सत्र) में देहरादून से मिलनें वाले कुल राजस्व 6794/ रूपय एवं कुमाऊँ–गढ़वाल से 1717/ रूपय राजस्व संग्रहण किया गया।[16] 1937 में कांग्रेसी शासन वाले संयुक्त प्रान्त के कुछ मैदानी क्षेत्रों जौनपुर, बदायूँ, एटा, बिजनौर आदि में शराब बंधी लागू की गई किन्तु पहाड़ो में मद्यविरोधी आन्दोलन के बाबजूद भी पूर्ण उपेक्षा की गई। फलस्वरूप 1946 में उत्तराँचल से आबकारी राजस्व बढकर 26,99,465/ रूपय हो गया[17] पहाड़ो में शराब प्रचलन आग्ल प्रशासन के व्यवसाहिक नीति के साथ प्रारम्भ हुआ, जनसंघर्षों के बाद भी इससे प्राप्त होने वाले राजस्व में भी साल दर साल इजाफा होता रहा और पृथक राज्य बनने के बाद भी उत्तराखण्ड़ में 2001 में कुल राजस्व 203.60 करोड था यह 2004 में बढकर 300 करोड तक पँहुच गया।[18] शराब की बढती प्रवृति के कारण लोगो की आर्थिकी पर बुरा असर पड रहा था, नशे ने आम जनता के स्वास्थ्य प्रतिकूल प्रभाव, नैतिकता का पतन, बच्चों एवं पुरूष वर्ग में शराब की लत बढने लगी, 1971 में उ0प्र0 सरकार नें भी स्वीकार किया है।[19] इन तमाम समस्याओं के कारण अपराधो में वृद्वि के साथ सामान्य जनजीवन में अशान्ति और असुरक्षा उत्पन होने लगी। उक्त बातो से प्रबुद्ध वर्ग भी भली भाँति परिचित था।[20] अन्ततः इन समस्याओं की जड शराब के विरोध के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता था। अतः 20वीं सदी के प्रारम्भ से ही शराब के बहिष्कार के लिये आन्दोलन शुरू हुआ। यद्वपि प्रारम्भ में मुख्यतः यह आन्दोलन कच्ची(देशी) शराब के विरूद्व चला।[21,22] किन्तु शहरी केन्द्रो एवं बीसवीं सदी के उतरार्द्व में विदेशी शराब के खिलाफ भी आन्दोलन शुरू किया गया।

पर्वतीय प्रदेश में शराब विरोधी आन्दोलन स्वतन्त्र रूप से बिना किसी बाह्य समर्थन से 20वीं सदी के प्रारम्भ से शुरू हो चुका था फिर भी महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाये गये मद्यनिषेध आन्दोलन के बाद ही प्रदेश में आन्दोलन नें गति पकडी। जिसकी बागडोर स्थानीय स्तर के नेताओं एवं महिलाओं के हाथों में थी। शराब की समस्या एवं निवारण को लेकर आन्दोलन अनवरत रूप से आजादी से पूर्व एवं पश्चात चलता रहा।

आजादी से पूर्व शराब विरोधी आन्दोलन

पर्वतीय अंचलों में पहली बार शराब के विरोध में आवाज अल्मोडा अखबार ने उठायी। अखबार के 2 जनवरी 1893 के अंक में सरकार के शराब के व्यवसायिक प्रवृति की निन्दा की गई और कहा कि अफीम और शराब से लोग स्वास्थ्य और संपति खोते जा रहें हैं, यहॉ तक कि वे चोरी, हत्या एवं अन्य अपराध करने में भी संकोच नही करते, फिर भी सरकार राजस्व प्राप्ति के लिये इन पदार्थों को प्रोत्साहन दे रही है। अखबार नें यह भी सिफारिश की कि नशीले पेय पदार्थो पर शीघ्र ही रोक लगाई जाये।[23]

पहली बार शराब के विरोध में प्रदर्शन 1907 में बागेश्वर एवं चौखुट्या में किया गया, जन प्रतिरोध के कारण उक्त स्थानों में शराब की दुकानें शीघ्र ही बन्द करनी पडी।[24]

1930–32 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान शराब के बहिष्कार को अभूतपूर्व सफलता मिली। महिलाओं ने जमकर शराब के दुकानों में शांतिपूर्वक धरना प्रदर्शन किये विभिन्न क्षेत्रों में शराब की दुकानें तोड़ी गई परिणामस्वरूप गाँधी इरविन समझौते में सरकार नें शराब की दुकानों पर शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन को विधि सम्मत मान लिया। गाँधीवादी आन्दोलन का व्यापक असर उत्तराँचल में भी हुआ। इसी दौरान पर्वतीय प्रदेश में मद्य निषेध आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया, शराब की दुकानों एवं शराब की भट्टियों पर धरना प्रदर्शन किये गये। 1930 में अल्मोड़ा में विश्नी देवी शाह, दुर्गा देवी, बची देवी एवं कुंती वर्मा के नेतृत्व में 100 से भी अधिक महिलाओं ने संगठित होकर शराब की दुकानों को तोडते हुये कारावास गयी।[25] दुर्गादेवीपंत, जीवंती ठकुरानी नें रानीखेत में और पद्मावती, भागीरथी देवी चौहान आदि ने हल्द्वानी में शराब की भट्टियों के आने धरनें दिये।[26] 7 मई 1930 को सत्यग्रही जगमोहन सिंह नेगी, छवांण सिंह, नारायणदास महन्त के नेतृत्व में जनसमूह नें लैंसडौन तहसील के अधिकांश शराब की दुकानों एवं भट्टियों को योजनाबद्ध ढंग से नष्ट कर दिया।[27] तल्ला उदयपुर क्षेत्र में डबलसिंह नेगी के नेतृत्व में 12 सत्यग्रहियों के दल ने शराब भट्टियों पर धरना देकर नष्ट करने का प्रयत्न किया।[28] अन्ततः सत्याग्रही उदयपुर क्षेत्र में शराब उत्पादन केन्दो को बन्द करने में सफल हुये। ब्रिटिश गढवाल के राजनैतिक गतिविधियों के केन्द्र कोटद्वार,दुग्डडा में प्रताप सिंह नेगी और बलदेव सिंह आर्य के नेतृत्व में शराब भट्टियों और दुकानों की नाकाबंधी का अभियान चलाया गया, जिसमें अनेक स्वयं सेवकों नें भाग लिया, नाकाबंधी के तहत नशेडियों को दुकानों तक नहीं पहुँचनें दिया गया। अन्ततः जिलाधिकारी एक्टन ने पुलिस के सहायता से धरना दे रहे आन्दोलनकारियों पर लाठी बरसाई गई सत्याग्रहियो को बन्दी बनाकर कारावास में डाला गया। 1932 में जनपद देहरादून में शराब के भट्टियों पर धरना देने का कार्यक्रम बनाया गया कार्यक्रम में महिलाओं, साधु संतों एवं डी0ए0वी0 कालेज के छात्रों में जुलूस निकालकर शराब की दुकानों एवं होटलों में खडे अंग्रेज सैनिको पर पथरा किया। प्रशासन ने इन आन्दोलनकारियों को गाडियों में भरकर शहर से दूर जंगलों में छोडने की नीति अपनाई तथा कुछ को कारावास की सजा दी गई[29,30,31] सत्याग्रहियों के प्रति दमनात्मक नीति अपनाये जाने के पीछे स्पष्ट कारक राजस्व में हो रही कमी थी।[32,33.] 1937 में जिन प्रान्तों में कांग्रेसी सरकार बनी, वहाँ मद्यनिषेध प्रमुख मुद्दा बना रहा, यद्वपि मद्रास, बाम्बे प्रान्तो में मद्यानिषेध लागू किया गया, किन्तु सयुक्त प्रान्त में कुछ ही मैदानी जिलों एटा, मैनपुरी, बदायूँ, बिजनौर,जौनपुर आदि में शराब बंधी लागू की गई।[34] 1942 में भारत छोडो आन्दोलन के दौरान महिलाए पुनः मद्यनिषेद्य गतिविधियों में सक्रिय हुई। पर्वतीय प्रदेशों में भारी जनसंघर्ष के बाद भी मद्यनिषेध की अन्देखी की गई। शायद पहाडों में शराब राजस्व का एक महत्वपूर्ण साधन था।

आजादी के पश्चात शराब विरोधी आन्दोलन

स्वाधीनता के उपरान्त भी शासन द्वारा आंग्ल शासन की आबकारी नीति को अक्षरतः पालन किया जाता रहा। आजादी के पश्चात उत्तरप्रदेश में आंशिक मद्यनिषेद्य प्रयासो के अन्तर्गत पर्वतीय क्षेत्रो को सम्मलित न किये जाने पर यहाँ शराब का प्रचलन क्रमशः बढता चला गया। 1960 के दशक में गढ़वाल के पौड़ी, श्रीनगर, कोटद्वार, लैन्सडौन, टिहरी गढवाल में टिंचरी नाम से शराब का प्रचलन तेजी से हुआ।[35] फलस्वरूप विविध क्षेत्रो में आन्दोलन प्रारम्भ होनें लगे । पौड़ी में शराब के विरूद्व सशक्त आवाज दीपा देवी(इच्चागिरी माई) ने उठाई। उन्होंने 1955–56 पौड़ी टिंचरी की दुकानो में आग लगा दी, टिंचरी के विरोध के कारण वह टिंचरी माई के नाम से प्रसिद्व हुई।[36,37,38] 1962 में देहरादून में दर्जी का कार्य करने वाले गढवाल के सर्वोदय कार्यकर्ता सोहनलाल ने अपने सहयोगियों की सहायता से पोष्टकार्ड अभियान द्वारा प्रदर्शन किये। सरकार पर इसका असर न पडने पर कोटद्वार तथा पौड़ी में शराब की दुकानो पर तीन माह तक धरना दिया जाता रहा।[39] 1960 के दशक टिहरी में मद्यनिषेद्य आन्दोलन की बागडोर पर्यावरणविद्व सुन्दरलाल बहुगुणा ने संभाली। टिहरी में सुन्दरलाल बहुगुणा ने शराब के विरूद्ध अनिश्चतकालीन उपहास प्रारम्भ किया जिसमें महिलाओं की सक्रिय भागीदारी रही। अन्ततः बादशाहीथौल में शराब की दुकान बंद करने के उपरान्त 13वें दिन उपहास खत्म किया।[40]

1962 में टिहरी के सिलियारा में पुनः आन्दोलन की लहर उठी, सुन्दरलाल बहुगुणा एवं उनकी पत्नी विमला बहुगुणा ने कच्ची शराब के विरूद्ध आन्दोलन छेडा, आन्दोलन के उग्र होने पर 1 अप्रैल 1965 में सरकार ने घनसाली में शराब की दुकान न खोलनें की घोषणा की। इसी दौरान चमोली के चाँदपुरी गाँव की महिलायें बच्चों समेत आठ–दस मील पैदल जाकर शराब की दुकानों में धरना देती थी, इस आन्दोलन का नेतृत्व श्रीदेव सुमन की माँ तारा देवी ने किया।[41] पर्वतीय क्षेत्रों में उग्र शराब विरोधी आन्दोलन को देखते हुये सरकार ने 1969 पौडी, टिहरी, उत्तरकाशी, चमोली, पिथोरागढ आदि में मद्यनिषेद्य लागू किया गया।[42.] 1977 में जनता पार्टी की सरकार ने केन्द्र में नशाबन्दी नीति लागू की। अतः अल्मोडा, नैनीताल, देहरादून में भी पूर्ण शराब बन्दी लागू कर दी गई।[43,44.] केन्द्र में काग्रेस के पुनः सत्तासीन होने पर 1980 में पुनः शराब बन्दी नीति को हटा दिया गया। सरकार के

इस कदम से पहाड़ों में आक्रोश उत्पन होंने लगा, 1984 में अल्मोड़ा एवं चौखुटिया में शराब विरोधी आन्दोलन पुनः[45] प्रारम्भ हुआ, देखते ही देखते संपूर्ण पर्वतीय क्षेत्रों में मद्य के विरूद्व आन्दोलन नें उग्र रूप धारण कर लिया। 1 जनवरी 1984 में उत्तराखण्ड़ जनसंघर्ष वाहिनी के नेतृत्व में "नशा नहीं रोजगार दो" आन्दोलन शुरू किया गया। जिसमें महिलाओं नें सक्रिय भूमिका निभाई। जो 1990 तक छिटपुट रूप से चलता रहा।[46] पुरूष वर्ग में शराब की लत से चूंकि सर्वाधिक पीडा महिलाओं को झेलनी पडती है। अन्ततः महिलाएँ जिन्होंने उत्तराँचल निमार्ण में पुरूष वर्ग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आन्दोलन में सम्मलित हुई ने नये राज्य की कल्पना नशा मुक्त राज्य के रूप में देखने लगी।[47]

पृथक राज्य बनने के बाद भी सरकार ने महिलाओं की बिगडती स्थति और युवाओं बढते मद्यपान की लत के बाबजूद भी मद्यनिषेध आन्दोलनों की अनदेखी कर राजस्व प्राप्ति का साधन बना रखा है। यद्वपि यदा कदा सरकार पर्वतीय प्रदेशो में धार्मिक आस्ता को ध्यान में रखकर मद्यनिषेद्य लागू कर देती है। किन्तु इसका भी पालन ठीक से नही किया जाता है।

आन्दोलन के असफलता के कारण

20वीं सदी के प्रारंभ से शुरू मद्यनिषेद्य आन्दोलन वर्तमान में 100 वर्षों बाद भी अपनें लक्ष्य में पूर्ण सफल नहीं हो सका । आन्दोलन की असफलता के लिये प्रारम्भिक दौर से ही कुछ मूलभूत कारक मौजूद रहे हैं। आन्दोलन को कभी भी संपूर्ण जनता यदा अधिकांश पुरूष वर्ग, उच्च सभ्रांत वर्ग की महिलायें, युवा वर्ग का कभी भी पूर्ण समर्थन प्राप्त नही हो सका, आन्दोल में केवल उन्ही महिलाओ ने भाग लिया जिन्हे सर्वाधिक पीडा झेलनी पडी। इसलिये प्रारम्भ से ही आन्दोलन नेतृत्व विहीन रहा। संगठनशक्ति एवं अनुभववहीनता के चलते कभी भी आन्दोलन के लिये स्पष्ट कार्यक्रम नहीं बनाये गये। इसलिये विरोध के लिये कभी भी एकता स्थापित नही हो सका इसलिये आन्दोलन हमेशा बिखरा रहा। आन्दोलन को कभी भी मीडिया का खुलकर समर्थन प्राप्त नही हो सका। प्रचार के अभाव में लोग जागृत नही हो सके न ही सरकार पर शराब बंधी के लिये दबाब जा सका। जबकि चिपको आन्दोलन जो चमोली के सीमांत गाँव से शुरू हुआ को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनानें में मीडिया की केन्द्रीय भूमिका रही। मद्यविरोधी शक्तियाँ हमेशा शक्शिाली और संगठित रहीजो हमेशा से ही आन्दोलनकारियो पर भारी पडती रही शराब समर्थको द्वारा ब्रिटिश काल से ही शराब सेवन का प्रचार किया जाता रहा। स्वाधीनता के पश्चात कई बौद्धिकों ने प्रचार किया कि शराब पर्वतीय प्रदेश के विकास के लिये आर्थिकी का मुख्य जरिया है, सरकारी राजस्व का प्रमुख साधन है। ऐसे वर्ग द्वारा समय समय पर "शराब खुलाओ पहाड बचाओ" के नारे लगाये जाते रहे हैं।[48,49] आन्दोलन के असफलता के लिये सर्वाधिक उत्तरायी कारण सरकार की अविवेक पूर्ण नीतियाँ जिम्मेदार रही है। राजस्व के लालच में आन्दोलन को कभी भी सरकार का समर्थन नही मिल सका।

निष्कर्ष

किसी भी आन्दोलन की सफलताओं एवं असफलताओं से आन्दोलन का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता क्योकि आन्दोलन के तात्कालीन सफलताओं से कई आधिक लाभ दीर्घकालीन होतें हैं, यद्वपि पर्वतीय प्रदेश उत्तराँचल में मद्यनिषेध आन्दोलन को अपने उद्देय में पूर्ण सफलता नही भी मिली हो फिर भी आन्दोलन लोगों में जागरूकता लानें में कुछ हद तक सफल रहा। ग्रामीण अंचलों में कच्ची शराब के उत्पादन को खत्म करनें में सफल रहा। कही–कही आन्दोलनकारी शराब की दुकाने एवं गाँवो में मद्यसेवन बंद करनें में भी सफल रहे हैं। यह आन्दोलन का ही परिणाम है कि आज भी नशे की संस्कृति के विरूद्व सामाजिक संगठनों, महिला मंगलदलों गैर सरकारी संगठनों द्वारा नशा विरोधी आन्दोलन निरन्तर चलाये जा रहे हैं।

अंत टिप्पणी

1. *कौटलीय अर्थशास्त्रम्, (हि0अ0 वाचस्पति गैरोला), चौखम्बा विद्यायाभवन, वाराणसी, (2003) पृ0 200,201,202,203,204,*
2. *मनुस्मृति, द्वितीय भाग, (हि0अ0 शिवराज आचार्य), चौखम्बा विद्यायाभवन, वाराणसी, (2007), पृ0 638,657,801,802,803,817,818,*
3. *शुक्रनीतिः, (हि0अ0 जगदीश चन्द्र मिश्र), चौखम्बा विद्यायाभवन, वाराणसी, (1998) पृ0568*
4. *चन्द्र, शतीश, मध्यकालीन भारत, राजनीति, समाज और संस्कृति, आठवीं से सत्रहवीं सदी तक, प्रकाशन ओरियंट ब्लैक्स्वॉन, प्रा0लि0 हिमायत नगर हैदराबाद,(2007) पृ0 93,*
5. *वर्मा, हरिशचन्द्र(सम्पा), मध्यकालीन भारत भाग–2, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 21वाँ संस्करण 2009, पृ0 139,*
6. *मित्तल, ए0के0, तथा आर0 अग्रवाल, विश्व का इतिहास 1789 से 1919 ई0 तक, सत्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2003, पृ0 298 से 305 तक,*
7. *कौटलीय अर्थशास्त्रम्, उपरोक्त पृष्ठ,*
8. *डबराल,शिवप्रसाद,उत्तराखण्ड का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास ,भाग – 7 बीरगाथा प्रेस दोगडा, पौडी गढवाल, पृ0360*
9. *बिष्ट, प्रतापसिंह, चमोली जनपद, में मादक–द्रव्यों (नशीले पदार्थों) के सेवन की बढती प्रवृति–एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, अप्रकाशित शोध ग्रंथ (1991), हे0न0ब0ग0वि0वि0 पृ018*
10. *रावत,चन्द्रपाल (सम्पा), गढवाल और गढवाल, विंसर पब्लिशिंग क0,विकास मार्ग, पौडी, पौडी गढवाल(1997), पृ068*
11. *एटकिंसन, ई0टी0,द हिमायलन गजेटियर, खण्ड–3, भाग–2, कॉस्मों पब्लिकेशन, दिल्ली(1973), पृ0524*
12. *वाल्टन, गढवाल गजेटियर, (हि0अ0 प्रकाश थपलियाल, (2006) हिमालयन सचेतन संस्थान, आदि बदरी, चमोली, पृ0102,*

13. वाल्टन, गढवाल गजेटियर, (हि0अ0 प्रकाश थपलियाल, 2006) हिमालयन सचेतन संस्थान, आदि बदरी, चमोली, उपरोक्त पृष्ट,
14. रावत,चन्द्रपाल(सम्पा), गढवाल और गढवाल, विंसर पब्लिशिंग क0, विकास मार्ग, पौडी, पौडी गढवाल (1997), पृ068
15. धस्माना, योगेश,उत्तराखण्ड में जनजागरण और आन्दोलनों का इतिहास, विंसर पब्लिशिंग क0 देहरादून (2006), पृ0172,
16. प्री0 म्यूटिनी रिकार्ड (कुमाऊँ), एम0एल0आर0 वॉल्यूम–10,भाग–11,पृ069
17. योगेश धस्माना, पृ0172
18. विजयलक्ष्मी डबराल, छात्रों में मद्यपान की समस्या का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन जनपद टिहरी गढवाल के विशेष संदर्भ में अप्रकाशित शोध ग्रंथ (2010), हे0न0ब0ग0वि0वि0, पृ034
19. नवीन चन्द्र ढौंडियाल, एवं अन्य, पृथक पर्वतीय राज्य,भाग–1, (1993), श्री अल्मोडा बुक डिपो, मालरोड, पृ0215
20. अल्मोडा अखबार (साप्ताहिक), 2 जनवरी 1893,
21. नवीन चन्द्र ढौंडियाल, एवं अन्य, पृथक पर्वतीय राज्य,भाग–1, (1993), श्री अल्मोडा बुक डिपो, मालरोड, पृ0215
22. पाठक, शेखर, नशा एक षडयंत्र है, भाग–1, यामा रोहिला लॉज, नैनीताल,1985, पृ01,
23. अल्मोडा अखबार (साप्ताहिक), 2 जनवरी 1893, उद्वरित धस्माना, योगेश,उत्तराखण्ड में जनजागरण और आन्दोलनों का इतिहास, विंसर पब्लिशिंग क0 देहरादून (2006), पृ0172,
24. बिष्ट, प्रताप सिंह, चमोली जनपद, में मादक–द्रव्यों (नशीले पदार्थों) के सेवन की बढती प्रवृति–एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, अप्रकाशित शोध ग्रंथ (1991), हे0न0ब0ग0वि0वि0 पृ0 20,
25. 25.सिंह राकेश, उत्तरॉचल में पिछले दो दशकों में महिलाओं की राजनीति सक्रियता के कारण, प्रभाव एवं सीमाओं का एक अध्ययन, गढवाल मंडल के विशेष संदर्भ में, अप्रकाशित शोध ग्रंथ (2008), हे0न0ब0ग0वि0वि0, पृ0164,
26. रावत, चन्द्रपाल (सम्पा), गढवाल और गढवाल,विंसर पब्लिशिंग क0,विकास मार्ग, पौडी, पौडी गढवाल (1997), पृ068
27. कर्मभूमि स्वाधीन अंक ,12 सितम्बर 1972, लेख डबल सिंह नेगी, गढवाल की बारदोली उदयपुर, एक सिंहावलोकन,
28. कर्मभूमि स्वाधीन अंक, 26 जनवरी 1956, लेख बलदेव सिंह आर्य
29. वर्मा, डा0 आर0पी0, विभूतियाँ देवभूमि की (1997), सरस्वती प्रेस, देहरादून, पृ0154,
30. पंत सुरेश, (सम्पा0) उत्तरीय, प्रकाशन, बुद्वि बल्लभ तिवारी, जनकपुरी,नई दिल्ली,(1989), पृ0 61,
31. कर्मभूमि विशेषॉक(कोटद्वार), 26 जनवरी 1956, पृ069,
32. कर्मभूमि स्वाधीन अंक, 26 जनवरी 1956,
33. डबराल, शिवप्रसाद, उत्तराखण्ड का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, भाग–8 बीरगाथा प्रेस दोगडा, पौडी गढवाल, पृ0248,
34. बिष्ट,प्रतापसिंह,चमोली जनपद, में मादक–द्रव्यों(नशीले पदार्थों) के सेवन की बढती प्रवृति–एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, अप्रकाशित शोध ग्रंथ (1991),हे0न0ब0ग0वि0वि0 पृ0 14,
35. रावत, चन्द्रपाल (सम्पा), गढवाल और गढवाल, विंसर पब्लिशिंग क0,विकास मार्ग, पौडी, पौडी गढवाल(1997), पृ068
36. उपरोक्त, पृ074,
37. दिनेश जोशी (सम्पा0) मध्य हिमालय, दिसम्बर 1996, नई दिल्ली, पृ012, उद्वरित, .सिंह राकेश, उत्तरॉचल में पिछले दो दशकों में महिलाओं की राजनीति सक्रियता के कारण, प्रभाव एवं सीमाओं का एक अध्ययन, गढवाल मंडल के विशेष संदर्भ में, अप्रकाशित शोध ग्रंथ (2008), हे0न0ब0ग0वि0वि0, पृ0164,
38. वर्तमान उत्तराखण्ड, जून 1995, टिंचरी माई, प्रकाशन भुवनेश्वरी महिला आश्रम, अंजनीसैण,टिहरी गढ़वाल,
39. दिनेश जोशी (सम्पा0) मध्य हिमालय, दिसम्बर 1996, नई दिल्ली, पृ012 उद्वरित उपरोक्त,
40. रावत,चन्द्रपाल(सम्पा), गढवाल और गढवाल, विंसर पब्लिशिंग क0, विकास मार्ग, पौडी, पौडी गढवाल(1997), पृ068
41. उपरोक्त,
42. सिंह राकेश, उत्तरॉचल में पिछले दो दशकों में महिलाओं की राजनीति सक्रियता के कारण, प्रभाव एवं सीमाओं का एक अध्ययन, गढवाल मंडल के विशेष संदर्भ में, अप्रकाशित शोध ग्रंथ (2008), हे0न0ब0ग0वि0वि0, पृ0164,
43. उप्रेती, प्रभात,एकाधिकार में पहचान खोती क्षेत्रीयता में संघर्षरत उत्तराखण्ड़, गोपेश प्रकाशन,पृ0 97,
44. दिनेश जोशी (सम्पा0) मध्य हिमालय, दिसम्बर 1996, नई दिल्ली, पृ012 उद्वरित, उपरोक्त,
45. धनिका रेखा, उत्तराँचल में शराब समस्या, आधी जमीन विशेषाँक, अक्टूबर–दिसम्बर ,अंक4, प्रकाशन प्रा0लि0, एस0पी0वर्मा रोड, पटना, 2001, पृ0131
46. सिंह राकेश, उत्तरॉचल में पिछले दो दशकों में महिलाओं की राजनीति सक्रियता के कारण, प्रभाव एवं सीमाओं का एक अध्ययन, गढवाल मंडल के विशेष संदर्भ में, अप्रकाशित शोध ग्रंथ (2008), हे0न0ब0ग0वि0वि0, पृ0168,
47. उपरोक्त,
48. नवीन चन्द्र ढौंडियाल, एवं अन्य, पृथक पर्वतीय राज्य,भाग–1,(1993), श्री अल्मोडा बुक डिपो, मालरोड, पृ0208
49. चन्द्र, विपिन्न, भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यमिक कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली वि. वि. (2015), पृ0 165,260